

नेट पर चोरी के शोध-पत्रों से विज्ञान जगत में तहलका

रिकॉर्ड कंपनियां और फिल्म स्टूडियो तो इंटरनेट पायरेसी (बौद्धिक सामग्री की चोरी) के साथ रहना सीख गए हैं। सारे प्रयासों के बाद भी उनकी रचनाओं की चुराई प्रतियां आसानी से उपलब्ध हैं। अब यही वैज्ञानिक शोध-पत्रों के साथ हो रहा है। न्यूयॉर्क की अदालत ने साइ-हब और लाइब्रेरी ऑफ जेनेसिस नामक दो वेबसाइटों को कॉपीराइट उल्लंघन के आरोप में विज्ञान संबंधी सामग्री की बड़ी प्रकाशक एल्सवियर को 1.5 करोड़ डॉलर का मुआवजा देने को कहा है। ये दोनों मुफ्त में लाखों वैज्ञानिक शोध-पत्र और किताबें मुहैया कराती हैं।

दोनों साइट वैज्ञानिकों में लोकप्रिय होती जा रही हैं, जो उनका इस्तेमाल सबस्क्रिप्शन से बचने के लिए करते हैं। 2011 में साइ-हब की स्थापना करने वाली अलेक्जेंड्रा एल्बाकियान मुकदमे में हाजिर नहीं हुई (और न लाइब्रेरी ऑफ जेनेसिस से कोई आया)। उन्होंने एक पत्र भेजकर साइट शुरू करने के कारण बताए। कजाकिस्तान यूनिवर्सिटी में अध्ययन के दौरान उन्हें सैकड़ों शोध-पत्रों तक पहुंच जरूरी थी। प्रति पेपर 32 डॉलर जैसी बड़ी राशि चुकाकर ही उन्हें हासिल किया जा सकता था, जो तर्कसंगत राशि नहीं थी। जब उन्हें पता चला कि अन्य विद्वान ऐसे पेपर के लिए इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं,

तो उन्होंने यह प्रक्रिया आसान बनाने के लिए साइ-हब साइट शुरू की। इसके सबसे ज्यादा यूजर ईरान, भारत और चीन में हैं। ऐसी भी बात नहीं कि हर डाउनलोडर के पास पैसे नहीं होते। अमेरिकी भी पांचवें सबसे बड़े यूजर हैं।

दोनों साइटें अमेरिकी अदालतों की पहुंच से दूर रूस में हैं। फिर भी अमेरिकी केमिकल सोसायटी ने मुकदमा कायम किया। अलेक्जेंड्रा यदि अमेरिका की यात्रा नहीं करती तो यह मुकदमा नाकाम रहेगा। लेकिन जल्दी ही उन्हें मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) द्वारा स्थापित 'डिसओबिडियंस अवॉर्ड' के लिए चुनकर अमेरिका का निमंत्रण मिल सकता है। यह अवॉर्ड एरॉन स्वार्ट्ज नामक छात्र के नाम पर शुरू किया गया है। वह मानता था कि एकेडेमिक पेपर्स हर किसी को मिलने चाहिए। उसने लाखों पेपर डाउनलोड कर जाहिर कर दिए। उस पर हैकिंग के आरोप लगे और मुकदमा शुरू होने के ठीक पहले उसने आत्महत्या कर ली। लगता नहीं कि अलेक्जेंड्रा अमेरिका जाएंगी पर इंटरनेट से वे अवॉर्ड जरूर स्वीकार कर सकेंगी।

© 2016 The Economist Newspaper Limited. All rights reserved. From The Economist, translated by DB Corp, published under licence. The original article, in English, can be found on www.economist.com